सिक्ख रहत मर्यादा

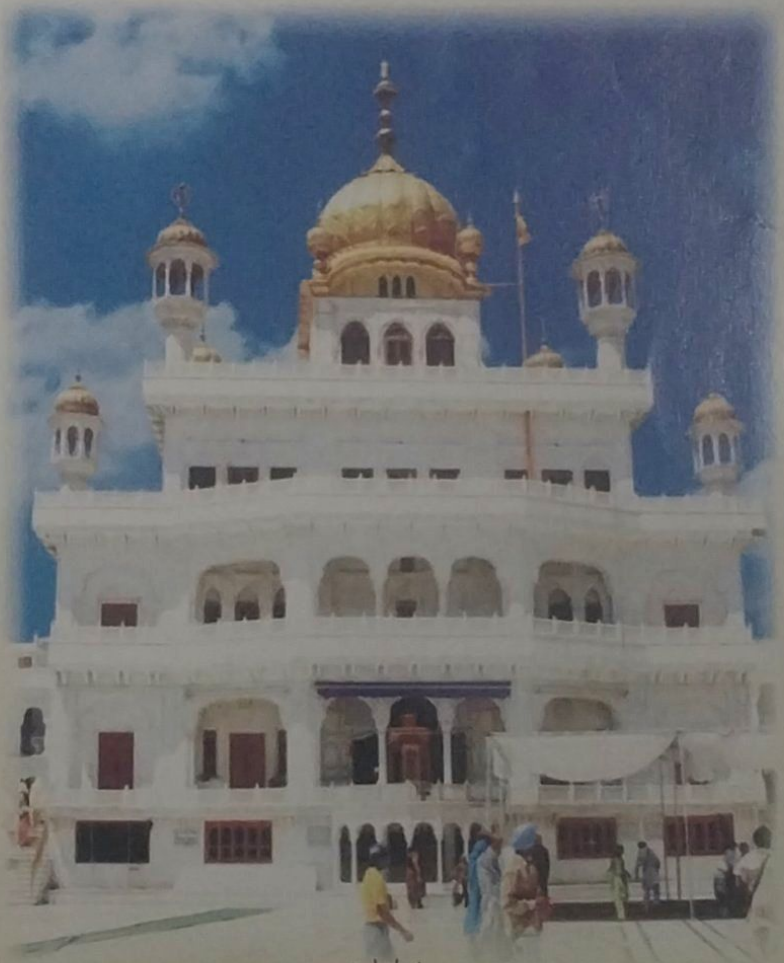

धर्म प्रचार कमेटी

(शिरोमणि गुःप्रः कमेटी) श्री अमृतसर।

निःशुल्क

प्रकाशक,
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुःप्रः कमेटी)
श्री अमृतसर।

फरवरी २०१८ ३०,०००

मुद्रकः
गोल्डन आफसेट प्रेस,
गुरुद्वारा रामसर साहिब, अमृतसर।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिक्ख रहित मर्यादा

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की 'रहु-रीत सब-कमेटी' द्वारा रहु-रीत के मसौदे की स्वीकृति 'सर्व हिंद सिक्ख मिशन बोर्ड' ने अपने प्रस्ताव नं. १, दिनांक १. ८. ३६ द्वारा तथा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने अपने प्रस्ताव नं. (१४९), दिनांक १२.१०.३६ द्वारा दी तथा फिर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की 'धार्मिक सलाहकार कमेटी' ने अपनी एकत्रता तिथि ७. १. ४५ में इसको विचार कर इसमें कुछ बढ़ोत्तरी-कमी करने की सिफारिश की। धार्मिक सलाहकार कमेटी की इस एकत्रता में निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे :-

१. सिंघ साहिब जत्थेदार मोहन सिंघ जी, जत्थेदार, श्री अकाल तख्त साहिब।
२. भाई साहिब भाई अच्छर सिंघ जी, हैड ग्रंथी, श्री दरबार साहिब, अमृतसर।
३. प्रो: तेजा सिंघ जी, एम. ए., खालसा कॉलेज, अमृतसर।
४. प्रो: गंगा सिंघ जी, प्रिंसीपल, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, अमृतसर।
५. ज्ञानी लाल सिंघ जी, एम. ए., प्रोफेसर, शहीद सिक्ख मिशनरी कॉलेज, अमृतसर।
६. प्रो: शेर सिंघ जी, एम. एस. सी., गवर्नमेंट कॉलेज, लुधियाना।
७. बावा प्रेम सिंघ जी, होती (प्रसिद्ध हिस्टोरियन)।
८. ज्ञानी बादल सिंघ जी, इंचार्ज, सिक्ख मिशन, हापुड़।

धार्मिक सलाहकार कमेटी की सिफारिश अनुसार इसमें बढ़ोत्तरी-कमी करने की स्वीकृति शिरोमणि गु: प्र: कमेटी ने अपनी एकत्रता तिथि ३.२.४५ के प्रस्ताव नं. ९७ द्वारा दी।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

अगले पृष्ठों पर जो रहित मर्यादा दी गई है, वह शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की 'रहु-रीत कमेटी' द्वारा शिरोमणि गुः प्रः कमेटी के दफ्तर में जिस रिपोर्ट सहित पहुंची थी, वह नीचे दी जा रही है:-

रिपोर्ट 'रहु-रीत सब-कमेटी'

(शिरोमणि गुः प्रः कमेटी)

सेवा में

श्रीमान सचिव साहिब,
शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी,
श्री अमृतसर।

श्रीमान जी,

शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने गुरुद्वारों में गुर-मर्यादा को ठीक तरह नियत करने हेतु, रहित मर्यादा का एक मसौदा तैयार करने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की सब-कमेटी बनायी थी:-

१. ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, अमृतसर।
२. ज्ञानी शेर सिंघ जी।
३. भाई बुद्ध सिंघ जी।
४. अकाली कौर सिंघ जी।
५. संत संगत सिंघ जी, कमालीआ।
६. भाई कान्ह सिंघ जी, नाभा।
७. संत गुलाब सिंघ जी, घोलीआं।
८. भाई लाभ सिंघ जी, ग्रंथी, श्री हरिमंदर साहिब।
९. भाई हजूरा सिंघ जी, श्री हजूर साहिब (या उनका भेजा हुआ कोई प्रतिनिधि)
१०. पंडित बसंत सिंघ जी, पटियाला।
११. भाई वीर सिंघ जी, अमृतसर।

१२. ज्ञानी हीरा सिंघ जी 'दर्द'।
१३. बावा हरकिशन सिंघ जी, प्रिंसीपल, गुरु नानक खालसा कॉलेज, गुजरांवाला।
१४. भाई त्रिलोचन सिंघ जी सुर सिंघ, जिला लाहौर।
१५. ज्ञानी हमीर सिंघ जी, अमृतसर।
१६. पंडित करतार सिंघ जी दाखा, जिला लुधियाना।
१७. जत्थेदार साहिब, श्री अकाल तख्त साहिब।
१८. जत्थेदार साहिब, तख्त श्री केसगढ़ साहिब।
१९. जत्थेदार साहिब, तख्त श्री पटना साहिब।
२०. प्रोफेसर गंगा सिंघ जी।
२१. प्रोफेसर जोध सिंघ जी।
२२. संत मान सिंघ जी, कनखल।
२३. जत्थेदार तेजा सिंघ जी।
२४. भाई रणधीर सिंघ जी।
२५. प्रोफेसर तेजा सिंघ जी (कनवीनर)।

इस सब-कमेटी के समागम ४-५ अक्तूबर १९३१, ३ जनवरी १९३२ और ३१ जनवरी १९३२ को श्री अकाल तख्त साहिब पर हुए, जिनमें निम्नलिखित सदस्य दर्शन देकर विचार में हिस्सा लेते रहे:-

अकाली कौर सिंघ जी, ज्ञानी शेर सिंघ जी, संत मान सिंघ जी निर्मले, प्रो: गंगा सिंघ जी, जत्थेदार श्री अकाल तख्त साहिब, जत्थेदार तख्त श्री केसगढ़ साहिब, ज्ञानी हीरा सिंघ जी 'दर्द', भाई लाभ सिंघ जी ग्रंथी, ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, ज्ञानी हमीर सिंघ जी, बावा हरकिशन सिंघ जी एम. ए., जत्थेदार तेजा सिंघ जी, भाई त्रिलोचन सिंघ जी और दास (कनवीनर)।

इनके अतिरिक्त निम्नलिखित सज्जन कभी-कभी दर्शन देते रहे:-

स. धर्मानंत सिंघ जी, प्रिंसीपल सिक्ख मिशनरी कॉलेज, स. भाग सिंघ जी वकील गुरदासपुर, स. वसावा सिंघ जी, सचिव शिरोमणि कमेटी, मा: तारा सिंघ जी (प्रधान, शिरोमणि अकाली दल) आदि।

यह मसौदा इस रहु-रीत कमेटी द्वारा शिरोमणि कमेटी की सेवा में पेश किया जाता है। आशा है, आप इस मसौदे को पंथ की राय लेने

के लिए छपवा कर प्रकाशित करोगे तथा राय आने पर शिरोमणि कमेटी के अधिवेशन में अंतिम स्वीकृति के लिए पेश करोगे।

इसके उपरांत शिरोमणि कमेटी की आज्ञानुसार ८ मई, १९३२ को इस मसौदे पर एक बार फिर विचार की गई। निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे:-

जत्थेदार तेजा सिंघ जी, संत तेजा सिंघ जी, ग्रंथी श्री ननकाणा साहिब, ज्ञानी गुरमुख सिंघ जी 'मुसाफ़र', ज्ञानी नाहर सिंघ जी, स. वसावा सिंघ जी, सचिव शिरोमणि कमेटी, भाई करतार सिंघ जी झब्बर, स. वरियाम सिंघ जी गरमूला (मैंबर इंचार्ज श्री ननकाणा साहिब), भाई प्रताप सिंघ जी पुस्तकों वाले, स. लाल सिंघ जी (शिरोमणि कमेटी), जत्थेदार मोहन सिंघ जी (श्री अकाल तख्त साहिब) आदि।

इसके उपरांत कई सज्जनों के जोर देने पर मसौदे पर पुन: विचार करने के लिए रहु-रीत कमेटी का एक और सम्मेलन २६ सितंबर १९३२ को किया गया। इसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:-

ज्ञानी शेर सिंघ जी, ज्ञानी ठाकर सिंघ जी, ज्ञानी हमीर सिंघ जी, भाई लाभ सिंघ जी, ग्रंथी श्री दरबार साहिब, ज्ञानी गुरमुख सिंघ जी 'मुसाफ़र', भाई जोगिंदर सिंघ जी (उप जत्थेदार तख्त श्री केसगढ़ साहिब), जत्थेदार तेजा सिंघ जी, ज्ञानी नाहर सिंघ जी तथा दास (कनवीनर)।

इनके अतिरिक्त संत तेजा सिंघ जी एम. ए. भी विचार में हिस्सा लेते रहे। कमेटी ने बड़े ध्यान से सारे मसौदे पर विचार की तथा इसको अच्छी तरह शोधा।

अब यह मसौदा रहु-रीत कमेटी की ओर से शिरोमणि कमेटी की सेवा में फिर पेश किया जाता है। कृपया इस मसौदे को छपवा कर संगतों की सेवा में अंतिम बार राय देने के लिए भेजो। साथ ही इस मसौदे को विचारने और अंतिम स्वीकृति देने के लिए शिरोमणि कमेटी का विशेष अधिवेशन बुलाया जाए।

१ अक्तूबर, १९३२

दास,
तेजा सिंघ
कनवीनर, रहु-रीत कमेटी।

मसौदे संबंधी राय भेजने वाले सज्जनों एवं सभाओं की सूची

रहु-रीत के मसौदे संबंधी राय भेजने वाले सज्जनों के नाम—

१. भाई सज्जन सिंघ जी 'मुहाफिज', दफ्तर गुरुद्वारा श्री हजूर साहिब जी, नांदेड़।
२. स. हज़ारा सिंघ जी 'ठेकेदार', भवानीगढ़ (पटियाला गवर्नमेंट)।
३. ज्ञानी हीरा सिंघ जी 'दर्द', लाहौर।
४. भाई हरनाम सिंघ जी 'नाचीज़', ग्राम नौशहिरा सून सकेसर, जिला शाहपुर।
५. भाई प्रताप सिंघ जी पुस्तकों वाले, अमृतसर।
६. भाई राम सिंघ जी, डेरा बाबा मिशरा सिंघ, चौक लछमणसर, अमृतसर।
७. ज्ञानी नाहर सिंघ जी, 'असली कौमी दर्द', अमृतसर (प्रथम मसौदा)।
८. ज्ञानी नाहर सिंघ जी 'असली कौमी दर्द', अमृतसर (दूसरी बार का)।
९. स. गंडा सिंघ जी जमादार पेंशनर, एग्जामिनर नकल फ़ारसी, दफ्तर डी. सी., जालंधर शहर।
१०. वैद्य नौरंग सिंघ, स. गुरबचन सिंघ जी 'तांघी', अमृतसर।
११. भाई मेला सिंघ जी, गुरुद्वारा चुरस्ती अटारी, अमृतसर।
१२. भाई साहिब भाई कान्ह सिंघ जी, सरदार बहादर, नाभा।
१३. एक प्रेमी सज्जन।
१४. एक प्रेमी सज्जन।
१५. संत टहिल सिंघ जी, मजीठा (अमृतसर)।
१६. भाई नरैण सिंघ जी, मसीत पलकोट, डाक: गढ़दीवाला, होशियारपुर।

१७. भाई उत्तम सिंघ जी, चिटागांग, बंगाल डाक: रेलवे बिल्डिंग, चिटागांग।
१८. एडीटर, खालसा ते खालसा एडवोकेट, अमृतसर।
१९. भाई अमरीक सिंघ जी, चूने वाले, गुजरांवाला।
२०. संत गुलाब सिंघ जी, खालसा अनंद भवन, मोगा (फिरोजपुर)।
२१. ज्ञानी हीरा सिंघ जी ढुडियाल (जेहलम)।
२२. भाई नंद सिंघ जी इंजीनियर, मार्फत बाबा बखतावर लाल शर्मा, बठिंडा।
२३. मास्टर बचन सिंघ जी 'बचन', सिधवां कलां, लुधियाना।
२४. भाई बिशन सिंघ जी सुहाणा, ज्ञानी, दुआबा खालसा हाई स्कूल, जालंधर।
२५. भाई नाज़म सिंघ जी सधार, दीनापुर, पटना।
२६. संत गुलाब सिंघ जी घोलीआं, मोगा।
२७. स. गंडा सिंघ जी 'जाचक', अमृतसर।
२८. मास्टर पूरन सिंघ जी अनंदपुरी, चौंक करोड़ी, अमृतसर।
२९. ज्ञानी बचित्तर सिंघ जी मार्फत खालसा ट्रेडिंग एजेंसी, कलकत्ता।
३०. भाई त्रिपत सिंघ जी, नागोकी सरली, अमृतसर।
३१. ज्ञानी रण सिंघ जी, गुरुद्वारा दमदमा साहिब, मीरपुर, बरास्ता जेहलम।
३२. भाई चतर सिंघ जी, गुरुद्वारा सारंबान शहर, मलाया द्वीप।
३३. भाई ठाकर सिंघ जी 'संसार', ग्राम फतहगढ़ घनईआ, डाक: खास, गुरदासपुर।
३४. पंडित करतार सिंघ जी दाखा, लुधियाना।
३५. भाई प्रेम सिंघ जी, ज्ञानी, खालसा हाई स्कूल, कल्लर, रावलपिंडी।
३६. भाई गुरदित्त सिंघ जी 'दरस', चक्क नं. १३२, डाक: खास, मुलतान।
३७. भाई सुंदर सिंघ जी दुबेरन, रावलपिंडी।

३८. ज्ञानी भगत सिंघ जी, खालसा हाई स्कूल, बाबा बकाला, अमृतसर।

३९. भाई सरन सिंघ जी, ग्रंथी, गुरुद्वारा रतन तला, श्री गुरु सिंघ सभा, कराची।

४०. भाई छहिबर सिंघ जी, हैँड मास्टर, खालसा उपदेशक कॉलेज, यतीमखाना घरजाख, गुजरांवाला।

४१. भाई मल्ल सिंघ जी खोसला, कशमीर स्टेट।

४२. डा. तेजा सिंघ जी ज्ञानी, फतह चक्क, तरनतारन।

४३. भाई गुरमुख सिंघ जी ग्रंथी, बड़ूंदी, लुधियाना।

४४. भाई मोहन सिंघ जी वैद्य, तरनतारन, अमृतसर।

४५. भाई जोध सिंघ जी 'कृपाण बहादर', अलोवाल, मलाया स्टेट।

४६. भाई प्रेम सिंघ जी पेन्शनर, मांगट, गुजरात।

४७. भाई महां बलबीर सिंघ अकाली, ग्राम पत्तो सिंघ वाली, डाक: खास, फिरोजपुर।

४८. भाई मनोहर सिंघ जी, पहला हैँड क्लर्क, स्थानीय गुरुद्वारा कमेटी, अमृतसर।

४९. भाई महिंदर सिंघ जी, प्रधान, गुरुद्वारा कमेटी, समाध भाई, ग्राम अणूके, फिरोजपुर।

५०. भाई गुरबचन सिंघ जी **(Ketrygess M.P. Nett Jormun'e B.Sc.)**

रहु-रीत के मसौदे संबंधी निम्नलिखित पंथक जत्थों की तरफ से राय पहुंचीं

१. गुः प्रः कमेटी, खडूर साहिब, अमृतसर।
२. खालसा कमेटी (स्कूल), होती।
३. श्री गुरु सिंघ सभा, गुजरांवाला।
४. सिक्ख स्त्री विद्ययक कमेटी, शांकर, जालंधर।
५. संगत, तख्त श्री केसगढ़ साहिब, अनंदपुर।
६. श्री गुरु सिंघ सभा, गुज्जरखान।
७. श्री गुरु सिंघ सभा, चक्क झुमरा मंडी, लायलपुर।
८. श्री गुरु सिंघ सभा, कुंतरीला, रावलपिंडी।
९. अकाली जत्था, शहर अमृतसर।
१०. सिक्ख टीचर्ज़ ऐसोसिएशन खालसा स्कूल, खारिआ, गुजरात।
११. खालसा. सेंट्रल दीवान, शिरोमणि पंथ मलौणी, जत्था माझा।
१२. श्री गुरु सिंघ सभा, ढुढिआल, जेहलम।
१३. श्री गुरु सिंघ सभा, बंबई।
१४ गुरु नानक खालसा मिडल स्कूल, डेहरा साहिब, जामा राय।
१५. खालसा दीवान, लाहौर छावनी।
१६. सेंट्रल सिक्ख नौजवान सभा, बरमा टौंजी (S. S. S.) एवं खालसा दीवान, बरमा।
१७. सचिव, अकाली जत्था, तहसील अंबाला।
१८. श्री गुरु सिंघ सभा, खुशाब, सरगोधा।
१९. पैसेफ्कि कोस्ट खालसा दीवान, स्टाकटन, अमेरिका।
२०. गुरुद्वारा कमेटी, मोमिओ, बरमा।
२१. जत्थेदार, बुड्ढा दल निहंग सिंघां चलदा वहीर, धोबी मंडी, लाहौर।

ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

सिक्ख रहित मर्यादा

सिक्ख की तारीफ

जो स्त्री या पुरुष एक अकाल पुरख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब तक), श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा दस गुरु साहिबान की बाणी और शिक्षा एवं दशमेश जी के अमृत पर निश्चय रखता है तथा किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिक्ख है।

सिक्ख की रहिणी दो प्रकार की है—
व्यक्तिगत तथा पंथक।

व्यक्तिगत रहिणी

१. नाम बाणी का अभ्यास। २. गुरमति की रहिणी। ३. सेवा।

१. नाम बाणी का अभ्यास

१. **सिक्ख अमृत वेले** (प्रातःकाल) (पहर रात रहती) जाग कर स्नान करे तथा एक अकाल पुरख का ध्यान करता हुआ **'वाहिगुरु'** नाम जपे।
२. **नितनेम** (नित्यनियम) का पाठ करे। नितनेम की बाणियां ये हैं:- **जपु, जापु तथा १० सवय्ये** (**'सावग सुध'** वाले)। ये बाणियां अमृत वेले पढ़नी।

सो दरु रहरासि सायंकाल सूर्यास्त होने पर पढ़नी। इसमें ये बाणियां शामिल हैं:-

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी में लिखे हुये नौं शबद ('सो दरु' से लेकर 'सरणि परे की राखहु सरमा' तक), बेनती चौपई पातशाही १० ('हमरी करो हाथ दै रच्छा' से लेकर 'दुसट दोख ते लेहु बचाई' तक), सवैया ('पांइ गहे जब ते तुमरे') तथा दोहरा ('सगल दुआर कउ छाडि कै'), अनंद की पहली पांच पउड़ियां और अंतिम एक पउड़ी,[1] मुंदावणी तथा सलोक महला ५ 'तेरा कीता जातो नाही।'

सोहिला—यह बाणी रात को सोने के समय पढ़नी।

अमृत वेले तथा सो दरु समय के नितनेम के उपरांत अरदास करनी आवश्यक है।

३. (क) अरदास[2] यह है:-

ੴ वाहिगुरु जी की फ़तह ॥

स्री भगौती जी सहाइ ॥ वार स्री भगौती जी की पातशाही १० ॥

प्रिथम भगौती सिमरि कै गुर नानक लईं धिआइ ॥ फिर अंगद गुर ते अमरदासु रामदासै होईं सहाइ ॥ अरजन हरगोबिंद नो सिमरौ स्री हरिराइ ॥ स्री हरिक्रिशन धिआईऐ जिस डिठै सभि दुख जाइ ॥ तेग बहादर सिमरिऐ घर नउ निधि आवै धाइ ॥ सभ थाईं होइ सहाइ। दसवां पातशाह स्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब जी! सब थाईं होइ सहाइ। दसां पातशाहीआं दी जोत स्री गुरु ग्रंथ साहिब जी दे पाठ दीदार दा धिआन धर के बोलो जी वाहिगुरू !

पांच प्यारों, चारों साहिबजादों, चालीस मुक्तों, हठियों, जपियों, तपियों, जिन्होंने नाम जपा, बांट कर छका, देग चलाई, तेग वाही,

---

१. इस अवसर पर या दीवान की समाप्ति पर जो अनंद साहिब का पाठ किया जाता है उसका भाव केवल गुरु साहिब के मिलाप के लिए हर्ष और धन्यवाद करना होता है।

२. यह अरदास का नमूना है। 'प्रिथम भगौती' वाले शबद और 'नानक नाम' वाली अंतिम दो पंक्तियों में कोई तबदीली नहीं हो सकती।

देख कर अनदेखा किया, उन प्यारों, सचियारों की कमाई का ध्यान धर के, खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरु!

जिन सिंघों-सिंघणियों ने धर्म हेत शीश दिये, बंद-बंद कटाये, खोपरियां उतरवाईं, चरखियों पर चढ़े, आरों के साथ चिराए गए, गुरुद्वारों की सेवा के लिये कुर्बानियां कीं, धर्म नहीं हारा, सिक्खी केशों-श्वासों संग निभाई, तिनकी कमाई का ध्यान धर के खालसा जी! बोलो जी वाहिगुरु!

पांचों तख्तों, समूह गुरुद्वारों का ध्यान धर के बोलो जी वाहिगुरु!

प्रिथमे सरबत्त खालसा जी की अरदास है जी, सरबत्त खालसा जी को वाहिगुरु, वाहिगुरु, वाहिगुरु चित्त आये, चित्त आने का सदका सर्व सुख हो। जहां-जहां खालसा जी साहिब तहां-तहां रछिआ रियायत, देग तेग फ़तह, बिरद की पैज, पंथ की जीत, सिरी साहिब जी सहाइ, खालसे जी के बोल बाले, बोलो जी वाहिगुरु!

सिक्खों को सिक्खी दान, केश दान, रहित दान, विवेक दान, विसाह दान, भरोसा दान, दानों के सिर दान, नाम दान, श्री अमृतसर जी के स्नान, चौंकियां, झंडे, बुंगे, युगो युग अटल, धर्म का जैकार, बोलो जी वाहिगुरु!

सिक्खों का मन नीचा, मति ऊंची, मति का रखवाला आप वाहिगुरु।

हे अकाल पुरख अपने पंथ के सदा सहायी दातार जीओ! श्री ननकाणा साहिब तथा अन्य गुरुद्वारों-गुरधामों के, जिनसे पंथ को विछोड़ा गया है, खुले दर्शन-दीदार और सेवा-संभाल का दान ख़ालसा जी को बख्शो।

हे निमाणों के मान, निताणों के ताण, निओटों की ओट, सच्चे पिता, वाहिगुरु! आपके हजूर....*की अरदास है जी!

अक्षर ज्यादा-कम, भूल-चूक क्षमा करना। सरबत्त के कारज रास करने।

---

*यहां उस बाणी का नाम लो जो पढ़ी है या जिस कार्य के लिए एकत्रता या संगत जुड़ी हो, उसका ज़िक्र उचित शब्दों में करो।

वही प्यारे मेल जिनके मिलने से तेरा नाम चित्त आये।
नानक नाम चढ़दी कला, तेरे भाणे सरबत्त दा भला।

इसके उपरांत अरदास में शामिल होने वाली सारी संगत श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे आदर सहित माथा टेके और फिर खड़े होकर 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' बुलाये। उपरांत 'सति श्री अकाल' का जयकारा गजाया जाये।

(ख) अरदास होते समय संगत में हाज़िर सभी स्त्री-पुरुषों को हाथ जोड़ कर खड़े होना चाहिए। जो सज्जन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की ताबे बैठा हो वह भी उठ कर चंवर करे।

(ग) अरदास करने वाला श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के समक्ष खड़े होकर, हाथ जोड़ कर अरदास करे। यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी मौजूद न हों तो किसी ओर मुंह करके अरदास करो, स्वीकृत है।

(घ) जब कोई विशेष अरदास किसी एक या अधिक व्यक्तियों की ओर से हो तो उनके बिना संगत में बैठे अन्य का उठना आवश्यक नहीं।

४. साध संगत में जुड़ कर गुरबाणी का अभ्यास

गुरुद्वारे

(क) गुरबाणी का असर साध संगत में बैठने से अधिक होता है। इसलिये सिक्ख के लिये उचित है कि सिक्ख संगतों के जोड़-मेल के स्थानों-गुरुद्वारों के दर्शन करे और साध संगत में बैठ कर गुरबाणी से लाभ उठाये।

(ख) गुरुद्वारे में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश नित्य-प्रति हो। बिना विशेष कारण के (जबकि प्रकाश जारी रखने की आवश्यकता हो) रात्रि को प्रकाश न रहे। साधारणत: रहरासि के पाठ के बाद सुख-आसन किया जाये। जब तक ग्रंथी या सेवादार श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सेवा के लिये हाज़िर रह सके या पाठियों, दर्शन करने वालों की आवाजाही रहे अथवा बेअदबी का खतरा न हो, तब तक प्रकाश रहे।

उपरांत सुख-आसन कर देना उचित है, ताकि बेअदबी न हो।

(ग) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को सम्मान सहित प्रकाशा, पढ़ा तथा संतोखा जाये। प्रकाश के लिए आवश्यक है कि स्थान साफ-सुथरा हो, ऊपर 'चांदनी' हो। प्रकाश 'मंजी साहिब' पर साफ-सुथरे वस्त्र बिछा कर किया जाए। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को संभाल कर प्रकाशन के लिए गदेले आदि सामान प्रयोग किये जायें और ऊपर के लिए रुमाल हो। जब पाठ न होता हो तो ऊपर रुमाल पड़ा रहे। प्रकाश के समय चंवर भी चाहिये।

(घ) ऊपर बताये सामान के अलावा धूप या दीये जला कर आरती करनी, भोग लगाना, ज्योतें जगानी, घंटे खड़काना आदि कर्म गुरमति अनुसार नहीं। हां, स्थान को सुगंधित करने के लिए फूल, धूप आदि सुगंधियां प्रयोग करना विवर्जित नहीं। कमरे में रोशनी के लिए तेल, घी या मोमबत्ती, बिजली, लैम्प आदि जला लेने चाहिये।

(ङ) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के समान (तुल्य) किसी पुस्तक को स्थापन नहीं करना। गुरुद्वारे में कोई मूर्ति-पूजा अथवा अन्य गुरमति के विरुद्ध कोई रीति या संस्कार न हो, न ही कोई अन्य मत का त्योहार मनाया जाये। हां, किसी अवसर अथवा एकत्रता को गुरमति के प्रचार के लिये उपयोग में लाना अयोग्य नहीं।

(च) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पंघूड़े (पीढ़ा साहिब) के पावों को मुट्ठियां भरना, दीवारों या चबूतरों पर नाक रगड़ना या मुट्ठियां भरना, मंजी साहिब के नीचे पानी रखना, गुरुद्वारों में मूर्तियां (बुत) बनानी अथवा रखनी, गुरु साहिबान या सिक्ख बुजुर्गों की तस्वीरों के आगे माथे टेकने, ऐसे कर्म मनमति हैं।

(छ) एक से दूसरे स्थान पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब ले जाते समय अरदास करनी चाहिये। जिसने सिर पर श्री गुरु ग्रंथ साहिब उठाया हो, वह नंगे पांव चले, परंतु यदि किसी मौके जोड़े पहनने की अति आवश्यकता पड़ जाए तो भ्रम नहीं करना।

(ज) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी को अरदासा सोध कर प्रकाश किया जाये। प्रकाश

करते समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब में से एक शबद का वाक लिया जाये।

(झ) जब श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की सवारी आए तो चाहे आगे प्रकाश हुआ हो या न, प्रत्येक सिक्ख को सम्मान के लिए उठ खड़े होना चाहिये।

(ञ) गुरुद्वारे के अंदर जाते समय जोड़े बाहर उतार कर, स्वच्छ होकर जाना चाहिये। यदि पांव मैले या गंदे हों तो जल से धो लेने चाहिये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब अथवा गुरुद्वारे को अपनी दाहिनी ओर रख कर परिक्रमा करनी चाहिए।

(ट) गुरुद्वारे के अंदर दर्शनों के लिए जाने के लिए किसी देश, मजहब, जाति वाले को मनाही नहीं, परन्तु उसके पास सिक्ख धर्म द्वारा विवर्जित तंबाकू आदि कोई वस्तु नहीं होनी चाहिये।

(ठ) गुरुद्वारे अंदर जाकर सिक्ख का पहला कर्म श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के आगे माथा टेकना है। उपरांत गुरु रूप साध संगत के दर्शन करके सहज से 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तह' बुलाई जाये।

(ड) संगत में बैठने के लिये भी सिक्ख-असिक्ख, छूत-छात, जात-पात, ऊंच-नीच का भ्रम या भेद-भाव नहीं करना।

(ढ) किसी मनुष्य का सतिगुरों के प्रकाश के समय अथवा संगत में गदेला, आसन, कुर्सी, चौकी, चारपाई आदि लगा कर बैठना अथवा किसी और भेदभाव से बैठना मनमति है।

(ण) संगत में अथवा सतिगुरों के प्रकाश के समय किसी सिक्ख को नंगे सिर नहीं बैठना चाहिये। संगत में सिक्ख स्त्रियों के लिये पर्दा करना अथवा घूंघट निकालना गुरमति विरुद्ध है।

(त) तख़्त पांच हैं :-

१. श्री अकाल तख्त साहिब, अमृतसर।
२. तख़्त श्री पटना साहिब, बिहार।
३. तख़्त श्री केसगढ़ साहिब, अनंदपुर।
४. तख़्त श्री हजूर साहिब, नांदेड़।
५. तख़्त श्री दमदमा साहिब (तलवंडी साबो)।

(थ) तख्तों के खास स्थान पर केवल रहितवान अमृतधारी सिंघ (सिंघ

या सिंघनी) ही चढ़ सकते हैं।
(तख्तों पर पतित और तनखाहिये सिक्ख के बिना हर एक प्राणी मात्र, सिक्ख अथवा गैर-सिक्ख की अरदास हो सकती है।)

(द) प्रत्येक गुरुद्वारे में निशान साहिब किसी ऊंचे स्थान पर लगा हो। निशान साहिब के पोशाके का रंग बसंती या सुरमई हो और निशान साहिब के सिरे पर सरब-लोह का भाला या खंडा हो।

(ध) गुरुद्वारे में नगाड़ा हो, जो समय पर बजाया जाए।

कीर्तन

(क) संगत में कीर्तन केवल सिक्ख ही कर सकता है।

(ख) कीर्तन गुरबाणी को रागों में उच्चारण करने को कहते हैं।

(ग) संगत में कीर्तन केवल गुरबाणी अथवा इसकी व्याख्या-स्वरूप रचना भाई गुरदास जी और भाई नंद लाल जी की बाणी का हो सकता है।

(घ) शबदों को जोटियों की धारना अथवा राग के साथ पढ़ते हुए बाहर की मनगढ़ंत एवं फालतू तुकें लगा कर धारना लगानी अथवा गाना अयोग्य है। शबद की तुक ही धारना बनाई जाये।

हुकम लेना

(क) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी आगे माथा टेकना, गुरु-रूप संगत के अदब से दर्शन करने और आवाज़ा लेना या सुनना, सतिगुरु के 'दर्शन' हैं। वाक लेने के बिना श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का रुमाल उठा कर दर्शन करना या करवाना मनमति है।

(ख) संगत में एक समय एक ही बात होनी चाहिए--कीर्तन या कथा, व्याख्यान या पाठ।

(ग) दीवान के समय संगत में श्री गुरु ग्रंथ साहिब की ताबे केवल सिक्ख (पुरुष अथवा स्त्री) ही बैठने का अधिकारी है।

(घ) संगत को पाठ केवल सिक्ख ही करके सुनाये। अपने आप के लिये

पाठ कोई गैर-सिक्ख भी कर सकता है।

(ङ) 'हुकम' लेते समय बायें पन्ने के ऊपरी सिरे से पहला शबद जो जारी है, आरंभ से पढ़ना चाहिए। यदि उस शबद का आरंभ पिछले पन्ने से शुरू होता है तो पत्रा पलट कर पढ़ना शुरू करो और शबद सारा पढ़ो। यदि वार हो तो पउड़ी के सारे सलोक और पउड़ी पढ़नी चाहिये। शबद के अंत में जहां 'नानक' नाम आ जाये, उस तुक पर भोग डाला जाए।

(च) दीवान की समाप्ति या भोग का अरदासा होकर अंतिम हुकम लिया जाये।

साधारण पाठ

(क) प्रत्येक सिक्ख को संभवत, अपने घर में श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के प्रकाश करने का अलग और एकांत स्थान नियत करना चाहिये।

(ख) प्रत्येक सिक्ख-सिक्खणी, बच्चे-बच्ची को गुरमुखी पढ़ कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ करना सीखना चाहिये।

(ग) प्रत्येक सिक्ख अमृत वेले प्रशाद छकने से पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का 'हुकम' ले। यदि इसमें चूक हो जाये तो दिन में किसी न किसी समय अवश्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ करे अथवा सुने। सफ़र आदि मुश्किल समय दर्शन करने में असमर्थ हो तो शंका नहीं करनी।

(घ) अच्छा तो यह है कि प्रत्येक सिक्ख अपना साधारण पाठ जारी रखे और महीने-दो महीने बाद (या जितने समय में हो सके) भोग डाले।

(ङ) पाठ आरंभ करने के समय अनंद साहिब (पहली पांच पउड़ियां और एक अंतिम पउड़ी) के पाठ के पश्चात अरदासा करके हुकम लेना चाहिये। फिर जपु साहिब का पाठ करना चाहिये।

अखंड पाठ

(क) अखंड पाठ किसी संकट अथवा उत्साह के समय किया जाता है। यह लगभग ४८ घण्टे में सम्पूर्ण किया जाता है। इसमें पाठ लगातार बिना रोक के किया जाता है। पाठ साफ और शुद्ध हो। बहुत तेज पढ़ना, जिससे सुनने वाला कुछ समझ न सके, गुरबाणी का अपमान है।

अक्षर-मात्रा का ध्यान रख कर पाठ शुद्ध और स्पष्ट करना चाहिये, चाहे समय कुछ अधिक लग जाये।

(ख) अखंड पाठ जिस परिवार या संगत ने करना है, वह स्वयं करे; परिवार के किसी व्यक्ति, साक-संबंधी, मित्र आदि मिल कर करें। पाठियों की संख्या नियत नहीं।

यदि कोई आदमी स्वयं पाठ नहीं कर सकता तो किसी अच्छे पाठी से सुन ले, पर यह न हो कि पाठी स्वयं अकेला बैठ कर पाठ करता रहे और संगत या परिवार का कोई आदमी न सुनता हो। पाठी की यथाशक्ति भोजन, वस्त्र आदि से योग्य सेवा की जाये।

(ग) अखंड पाठ या अन्य किसी प्रकार के पाठ के समय कुंभ, ज्योति, नारियल आदि रखना अथवा साथ-साथ या बीच-बीच किसी अन्य बाणी का पाठ जारी रखना मनमति है।

साधारण पाठ/अखंड पाठ का आरंभ

साधारण पाठ के आरंभ के समय प्रशादि लाकर अनंद साहिब (छः पउड़ियां) का पाठ करके अरदास के बाद 'हुकम' लिया जाये। अखंड पाठ के समय कड़ाह प्रशादि हो, फिर अनंद साहिब (छः पउड़ियां) का पाठ करने के बाद अरदास करके तथा 'हुकम' लेकर पाठ का आरंभ किया जाये।

भोग

(क) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के पाठ (साधारण अथवा अखंड) का भोग मुंदावणी पर अथवा रागमाला पढ़ कर, चलती स्थानक रीति अनुसार डाला जाये। (इस बात सम्बंधी पंथ में अभी तक मतभेद है, अतः रागमाला के बिना श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की बीड़ लिखने या छापने का साहस कोई न करे।) इसके बाद अनंद साहिब का पाठ करके भोग का अरदासा किया जाये और कड़ाह प्रशादि बांटा जाये।

(ख) भोग के समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब की आवश्यकता अनुसार रुमाल,

चंवर, चाननी आदि की भेटा और पंथक कार्यों के लिये यथाशक्ति 'अरदास' कराई जाये।

कड़ाह प्रशादि

(क) कड़ाह प्रशादि, जो विधि अनुसार तैयार करके अथवा कराकर लाया जाये, संगत में प्रवान होगा।

(ख) कड़ाह प्रशादि तैयार करने की विधि यह है-स्वच्छ पात्र में त्रिभावली (आटा, उत्तम मीठा और घी एक समान डाल कर) गुरबाणी का पाठ करते हुए तैयार किया जाये। फिर स्वच्छ वस्त्र से ढक कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर स्वच्छ चौकी पर रखा जाये। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हजूर संगत को ऊंची आवाज में सुना कर अनंद साहिब की पहली पांच पउड़ियों तथा अंतिम एक पउड़ी का पाठ[1] किया जाये और अरदासा सोधा जाए तथा प्रवानगी के लिए कृपाण भेंट हो।

(ग) इसके उपरांत संगत में बांटने से पहले कड़ाह प्रशादि में से पांच प्यारों का गफ्फा निकाल कर बांटा जाये। उपरांत संगत में बांटते समय पहले ताबे बैठे सिंघ[2] को किसी कटोरे अथवा कटोरी में डाल कर दे और फिर बाकी संगत को बांटे। किसी लिहाज अथवा घृणा करके कोई भेदभाव न करे। सब सिक्ख, गैर-सिक्ख, नीच-ऊंच जाति वाले को एक जैसा बांटे। कड़ाह प्रशादि बांटते समय संगत में बैठे किसी मनुष्य से जात-पात, छूत-छात का ख्याल करके ग्लानि नहीं करनी चाहिये।

(घ) कड़ाह प्रशादि भेटा करने के समय कम से कम एक टका नकद अरदास भी हो।

---

१. एक बार अनंद साहिब का पाठ हो चुकने के बाद फिर कड़ाह प्रशादि की देग आ जाये तो अनंद साहिब का पाठ बार-बार नहीं करना, कृपाण भेंट करना ही काफी है।

२. ताबे बैठे सिंघ को दोहरा गफ्फा देना अयोग्य भेदभाव है।

५. गुरबाणी की कथा

(क) संगत में गुरबाणी की कथा सिक्ख ही करे।

(ख) कथा का उद्देश्य गुरमति दृढ़ाना ही हो।

(ग) कथा दस गुरु साहिबान की बाणी अथवा भाई गुरदास, भाई नंद लाल या किसी अन्य प्रमाणिक पंथक पुस्तक या इतिहास की पुस्तकों (जो गुरमति के अनुकूल हों) की हो सकती है, परन्तु अन्य मत की किसी पुस्तक की नहीं हो सकती। हां, प्रमाण किसी महात्मा या पुस्तक की उत्तम शिक्षा का लिया जा सकता है।

६. व्याख्यान

गुरुद्वारे में गुरमति के विरुद्ध कोई व्याख्यान नहीं हो सकता।

७. गुरुद्वारे का कार्यक्रम

गुरुद्वारे में संगत का कार्यक्रम साधारणत: इस प्रकार होता है:-

श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश, कीर्तन, कथा, व्याख्यान, अनंद साहिब, अरदास, फ़तह, सति श्री अकाल का जैकारा और 'हुकम'।

२. गुरमति की रहिणी

सिक्ख की आम रहिणी, क्रित, विरत, गुरमति अनुसार हो। गुरमति यह है:-

(क) एक अकाल पुरख के बिना किसी देवी-देवते की उपासना नहीं करनी।

(ख) अपनी मुक्ति का दाता और इष्ट केवल दस गुरु साहिबान, श्री गुरु ग्रंथ साहिब और गुरु साहिबान की बाणी को मानना।

(ग) दस गुरु साहिबान को एक ही ज्योति का प्रकाश रूप करके मानना।

(घ) जात-पात, छूआछूत, जंत्र-मंत्र-तंत्र, शगुन, तिथि, मुहूर्त, ग्रह, राशि, श्राद्ध, पितृ, ख्याह, पिंड-पत्तल, दीया, क्रियाकपाल, होम, यज्ञ, तर्पण,

शिखा-सूत, भद्धण, एकादशी, पूर्णमाशी आदि के व्रत, तिलक, जनेऊ, तुलसी, माला, गोर, मठ, मढ़ी, मूर्ति-पूजा आदि भ्रम-रूप कर्मों पर निश्चय नहीं करना। गुर-स्थान के बिना किसी अन्य धर्म के तीर्थ अथवा धाम को अपना स्थान नहीं मानना।

पीर, ब्राह्मण, पुच्छणा, मन्नत, शीरनी, वेद शास्त्र, गायत्री, गीता, कुरान, अंजील आदि पर निश्चय नहीं करना। हां, आम परिचय के लिये अन्य मतों के ग्रंथों का पढ़ना योग्य है।

(ङ) खालसा सारे मतों से न्यारा रहे, पर किसी अन्यधर्मी का दिल न दुखाए।

(च) प्रत्येक काम करने से पहले वाहिगुरु के आगे अरदास करे।

(छ) सिक्ख के लिए गुरमुखी विद्या पढ़नी ज़रूरी है। अन्य विद्या भी पढ़े।

(ज) संतान को गुरसिक्खी की विद्या दिलाना सिक्ख का फ़र्ज़ है।

(झ) केश लड़के के जो हों, सो उनका बुरा न मांगे, केश वहीं[1] रखे। नाम सिंघ रखे। सिक्ख अपने लड़के लड़कियों के केश साबत रखे।

(ञ) सिक्ख भांग, अफीम, शराब, तम्बाकू आदि नशे न बरते। अमल प्रशादे का ही रखे।

(ट) सिक्ख पुरुष अथवा स्त्री को नाक, कान छेदना मना है।

(ठ) गुरु का सिक्ख कन्या न मारे, कन्या-मार के साथ न बरते।

(ड) गुरु का सिक्ख धर्म की किरत करके निर्वाह करे।

(ढ) गुरु का सिक्ख गरीब की रसना को गुरु की गोलक जाने।

(ण) चोरी यारी न करे, जुआ न खेले।

(त) पर बेटी को बेटी जानै।
पर इसत्री को मात बखानै।
अपनि इसत्री सों रति होई।
रहितवंत सिंघ है सोई।
इसी तरह सिक्ख स्त्री अपने पतिव्रत धर्म में रहे।

(थ) गुरु का सिक्ख जन्म से लेकर देहांत तक गुर-मर्यादा करे।

---

१. जन्म-काल के।

(द) सिक्ख, सिक्ख को मिलते समय 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फतह' बुलाए। पुरुष-स्त्री दोनों के लिए यही हुक्म है।

(घ) सिक्ख स्त्रियों के लिए परदा या घूंघट करना उचित नहीं।

(न) सिक्ख के लिए कछहरे और दसतार के बिना पोशाक संबंधी शेष कोई पाबंदी नहीं। सिक्ख स्त्री दसतार सजाये या न सजाये, दोनों ठीक हैं।

१. जन्म तथा नाम-संस्कार

(क) सिक्ख के घर बालक का जन्म होने के बाद जब माता उठने बैठने तथा स्नान करने के योग्य हो तो (दिनों की कोई संख्या निश्चित नहीं) परिवार और संबंधी गुरुद्वारे कड़ाह प्रशादि लेकर जाएं या कराएं और गुरु जी के हजूर 'परमेसरि दिता बंना' (सोरठि म. ५) 'सतगुरि साचै दीआ भेजि' (आसा म. ५) आदि हर्ष और धन्यवाद वाले शबद पढ़ें, उपरान्त यदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ रखा हो तो पाठ का भोग डाला जाये, फिर वाक लिया जाये। वाक के आरंभ के शबद का जो पहला अक्षर हो उससे ग्रंथी सिंघ बच्चे का नाम तजवीज़ करे और संगत की प्रवानगी लेकर नाम प्रकट करे। लड़के के नाम के पीछे 'सिंघ' शब्द और लड़की के नाम के पीछे 'कौर' शब्द लगाया जाये। उपरांत अनंद साहिब (छः पउड़ियां) के पश्चात बच्चे के नाम-संस्कार की खुशी का योग्य शब्दों में अरदासा करके कड़ाह प्रशादि बांटा जाये।

(ग) जन्म के संबंध में खाने-पीने में कोई सूतक का भ्रम नहीं करना, क्योंकि:-

जंमणु मरणा हुकमु है भाणै आवै जाइ ॥
खाणा पीणा पवित्रु है दितोनु रिजकु संबाहि ॥

(घ) श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रुमाल से चोला बना कर पहनना आदि मनमति है।

२. अनंद संस्कार

(क) सिक्ख-सिक्खणी का विवाह बिना जात-पात, गोत्र विचारने के होना चाहिये।

(ख) सिक्ख की पुत्री का विवाह सिक्ख के साथ ही हो।

(ग) सिक्ख का विवाह 'अनंद' रीति से करना चाहिये।

(घ) लड़की-लड़के का विवाह बचपन में करना विवर्जित है।

(ङ) जब लड़की शरीर, मन और आचार करके विवाह करने के योग्य हो जाये तो किसी योग्य सिक्ख के साथ 'अनंद' पढ़ाया जाये।

(च) 'अनंद' से पहले मंगनी की रस्म आवश्यक नहीं, परन्तु यदि करनी हो तो लड़की वाले किसी दिन संगत जोड़कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हजूर अरदासा सोध कर एक कृपाण, कड़ा और कुछ मीठा लड़के के पल्ले डाल दें।

(छ) 'अनंद' का दिन नियत करते समय कोई तिथि-वार, अच्छे-बुरे दिन की खोज करने के लिए पत्री वांचना मनमति है। कोई दिन जो दोनों पक्षों को आपस में सलाह करके अच्छा दिखे, नियत कर लेना चाहिये।

(ज) सेहरा, मुकुट अथवा कंकण बांधना, पितृ पूजने, कच्ची लस्सी में पांव डालना, बेरी या जंडी काटनी, घड़ोली भरनी, रूठ कर जाना, छन्द पढ़ने, हवन करना, वेदी गाड़ना, वेश्या का नाच, शराब आदि मनमति है।

(झ) जितने थोड़े आदमी लड़की वाला मंगाए, उतने साथ लेकर लड़का ससुराल घर जाये, दोनों ओर गुरबाणी के शबद गाए जायें और 'फतह' गजाई जाये।

(ञ) विवाह के समय श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के हजूर दीवान लगे। संगत या रागी कीर्तन करें। फिर लड़की तथा लड़का श्री गुरु ग्रंथ साहिब के हजूर बिठाए जायें। लड़की, लड़के के बायीं तरफ बैठे। संगत की आज्ञा लेकर 'अनंद' पढ़ाने वाला सिक्ख (पुरुष या स्त्री) लड़के लड़की

तथा उनके माता-पिता या सरबराहों को खड़ा करके 'अनंद' के आरम्भ का अरदासा सोधे। फिर वह लड़के लड़की को गुरमति अनुसार गृहस्थ धर्म के फ़र्ज़ों का उपदेश करे।

पहले, दोनों को सांझा उपदेश करे। इसमें सूही राग की 'लावों' के भाव अनुसार पति-पत्नी के संबंध को, जीव और परमात्मा के प्यार के नमूने पर ढालने की विधि बताए।

आपस में प्रेम द्वारा 'एक जोति दुइ मूरती' होना बताए और इस प्रकार गृहस्थ धर्म निभाते हुए अपने सांझे भर्ता 'अकाल पुरख' के साथ एकरूप होना दृढ़ाए। दोनों ने इस संयोग को मानव जन्म की यात्रा को सफलता से निभाने का साधन बनाना है। दोनों ने इस संयोग के द्वारा पवित्र और गुरमुखी जीवन बिताना है।

फिर लड़के तथा लड़की को अपने-अपने अलग-अलग, गृहस्थ धर्म के फ़र्ज़ बताये जाएं।

वर को बताया जाये कि लड़की वालों ने आपको ही सबसे अधिक योग्य जान कर वर चुना है। आप ने अपनी पत्नी को अर्धांगनी जान कर सारी अवस्थाओं में एक-सा प्यार करना है तथा बांट छकना है। इसके शरीर तथा इज्जत के रक्षक आप हो। स्त्रीब्रत धर्म में पक्के रहना। इसके माता-पिता तथा संबंधियों को अपने माता-पिता और संबंधियों के तुल्य आदर देना।

कन्या को बताया जाये कि आपको श्री गुरु ग्रंथ साहिब और संगत के हजूर इस सज्जन के लड़ लगाया जाता है। आप इनके 'निरमल भउ' में रहते हुए इनको ही अपने सारे प्रेम और श्रद्धा का मालिक समझना, दुख-सुख, देश-परदेस में अपने पतिब्रत धर्म में पक्के रहना, सेवा करनी। इनके माता-पिता तथा संबंधियों को अपने माता-पिता तथा संबंधियों की तरह जानना। उपदेश की बातें प्रवान करते हुए वर तथा कन्या दोनों श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी आगे माथा टेकें। फिर लड़की का पिता अथवा मुखी संबंधी लड़के का पल्ला लड़की के हाथ पकड़ाये और ताबे बैठा सज्जन सूही 'महला ४' में दी लावों का पाठ सुनाए। हरेक लांव का पाठ होने के बाद आगे वर और पीछे कन्या, वर का पल्ला पकड़कर श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की

चार परिक्रमा करें। परिक्रमा करते समय रागी अथवा संगत लावों को क्रम अनुसार सुर के साथ गाते जायें और वर-कन्या प्रत्येक लांव के बाद माथा टेक कर अगली लांव सुनने के लिए खड़े हो जायें। उपरांत माथा टेक कर अपने स्थान पर बैठ जायें तथा रागी सिंघ या अनंद कराने वाला अनंद साहिब की पहली पांच पउड़ियों और अंतिम पउड़ी का पाठ करे। फिर 'अनंद' की समाप्ति का अरदासा सोधा जाए तथा कड़ाह प्रशादि बांटा जाये।

(ट) अन्य मत वालों का विवाह 'अनंद' रीति से नहीं हो सकता।

(ठ) लड़के या लड़की का संयोग पैसा लेकर न करे।

(ड) यदि बालिका के माता-पिता कभी सबब से बालिका के गृह में जायें और वहां प्रशादि तैयार हो तो खाने से संकोचना नहीं। अन्न न खाना सब भ्रम है। खालसे को खाना खिलाना श्री गुरु बाबे अकाल पुरख बख्शा है। बेटी-बेटे वाले आपस में खाते रहें, इसीलिए जो गुरु ने दोनों नाते एक किये हैं।[१]

(ढ) जिस स्त्री का भर्त्ता काल-वश हो जाये, वह चाहे तो योग्य वर देख कर पुनर्संयोग कर ले। सिक्ख की स्त्री मर जाये तो उसके लिए भी यही हुक्म है।

(ण) पुनर्विवाह की भी यही रीत है, जो 'अनंद' के लिये ऊपर बताई है।

(त) आम हालातों में सिक्ख को एक स्त्री के होते दूसरा विवाह नहीं करना चाहिये।

(थ) अमृतधारी सिंघ को चाहिए कि अपनी सिंघणी को भी अमृत छका ले।

३. मृतक संस्कार

(क) प्राणी को मृत्यु समय यदि खाट पर हो तो नीचे नहीं उतारना, दीया-बाती, गऊ मनसाना अथवा अन्य कोई मनमति संस्कार नहीं करना। केवल गुरबाणी का पाठ करना अथवा 'वाहिगुरु वाहिगुरु' करना।

(ख) प्राणी के देह त्यागने पर धाड़ नहीं मारनी, पीटना या सियापा नहीं

१. प्रेम सुमार्ग।

करना, मन को वाहिगुरु की रज़ा में लाने के लिये गुरबाणी का पाठ अथवा वाहिगुरु का जाप किए जाना अच्छा है।

(ग) प्राणी चाहे छोटी से छोटी आयु का हो, वो भी सस्कारना चाहिये। जहां सस्कार का प्रबंध न हो सके वहां जल-प्रवाह या अन्य तरीका बरतने से शंका नहीं करनी।

(घ) सस्कारन के लिए दिन अथवा रात का भ्रम नहीं करना।

(ङ) मृतक शरीर को स्नान करा कर स्वच्छ वस्त्र पहनाए जायें और ककार अलग न किये जायें। फिर तख्ते पर डाल कर चलाणे का अरदासा सोधा जाये। फिर अर्थी को उठा कर शमशान भूमि की ओर ले जाया जाए। साथ वैराग्यमयी शबदों का उच्चारण किया जाये। सस्कार की जगह पर पहुंच कर चिता रची जाये। फिर शरीर को अग्नि-भेंटा करने के लिए अरदासा सोधा जाये। फिर प्राणी को अंगीठे पर रख कर पुत्र अथवा कोई अन्य संबंधी या हितु आदि अग्नि लगा दे। संगत कुछ दूरी पर बैठ कर कीर्तन करे अथवा वैराग्यमयी शबद पढ़े। जब अंगीठा पूरी तरह जल उठे तो (कपाल क्रिया आदि करना मनमति है) कीर्तन सोहिले का पाठ करके अरदासा सोध कर संगत लौट आए।

घर आकर अथवा पास के गुरुद्वारे में प्राणी निमित्त श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ रखा जाये और अनंद साहिब (छः पउड़ियां) का पाठ करके अरदासा दसवें दिन हो। यदि दसवें दिन न हो सके तो और कोई दिन सम्बंधियों की सुविधा को मुख्य रख कर नियत किया जाये। इस पाठ के करने में घर वाले तथा संबंधी मिल कर हिस्सा लें। यदि हो सके तो हर रोज रात्रि को कीर्तन भी हो। 'दुसहरे' के पश्चात चलाणे की कोई रस्म बाकी नहीं रहती।

(च) मृतक प्राणी का 'अंगीठा' ठंडा होने पर सारी देह की भस्म अस्थियों समेत उठा कर जल में प्रवाह कर दी जाये अथवा वहां ही दबा कर जमीन बराबर कर दी जाये। सस्कार स्थान पर मृतक-प्राणी की यादगार बनानी मना है।

(छ) अर्द्ध-मार्ग, सियापा, फूहड़ी, दीया, पिण्ड, क्रिया, श्राद्ध, बुड्ढा मरना

आदि करना मनमति है। चिता में से अस्थियां बीन कर गंगा, पातालपुरी, करतारपुर साहिब आदि स्थानों पर जाकर डालना मनमति है।

४. अन्य रीतियां

इन संस्कारों के अतिरिक्त समय-समय जो भी हर्ष-शोक का अवसर आ बने (जैसे नये मकान में प्रवेश करना, नई दुकान खोलना, बालक को पाठशाला डालना आदि) तो सिक्ख को चाहिये कि वाहिगुरु की सहायता के लिए अरदासा सोधे (अरदास करें)। सिक्खी में सारे संस्कारों का आवश्यक अंग बाणी का पाठ तथा अरदासा है।

३. सेवा

सेवा सिक्ख धर्म का एक विख्यात अंग है। इसको नमूने मात्र सिखाने के लिए गुरुद्वारों में ही प्रबंध किया होता है। साधारण रूप इसके ये हैं—गुरुद्वारे का झाड़ू, लेपन, संगतों की पानी पंखे की सेवा, लंगर की सेवा, जोड़े झाड़ना आदि।

(क) गुरु का लंगर:- इसके दो भाव हैं: एक सिक्खों को सेवा सिखाना, दूसरा ऊंच-नीच, छूआ-छूत का भ्रम मिटाना।

(ख) गुरु के लंगर में बैठ कर ऊंच-नीच, किसी जाति या वर्ण का प्राणी प्रशाद छक सकता है। पंगत में बिठाते समय किसी देश, वर्ण, जाति या मजहब का भेदभाव नहीं करना। हां, एक थाली में केवल अमृतधारी सिक्ख ही छक सकते हैं।

पंथक रहणी

१. गुरु-पंथ
२. अमृत संस्कार
३. तनखाह लगाने की विधि

४. गुरमता करने की विधि
५. स्थानक फ़ैसलों की अपील

१. गुरु-पंथ

सेवा केवल पंखे तथा लंगर आदि पर ही नहीं समाप्त हो जाती, सिक्ख की सारी ज़िंदगी परोपकार वाली है। सेवा सफल वह है जो अल्प यत्न से अधिक से अधिक हो सके। यह बात जत्थेबंदी के द्वारा हो सकती है। सिक्ख ने इसलिए व्यक्तिगत धर्म पूरा करते हुए साथ ही पंथक फ़र्ज़ भी पूरे करने हैं। इस जत्थेबंदी का नाम 'पंथ' है। प्रत्येक सिक्ख ने 'पंथ' का एक अंग होकर भी अपना धर्म निभाना है।

'गुरु-पंथ' : तैयार-बर-तैयार सिंघों के समूचे समूह को 'गुरु-पंथ' कहते हैं। इसकी तैयारी दसों गुरु साहिबान ने की और दशम गुरु जी ने इसका अंतिम स्वरूप बांध कर गुरुआई सौंपी।

२. अमृत-संस्कार

(क) अमृत छकाने के लिए एक विशेष स्थान पर प्रबंध हो। वहां आम लोगों का रास्ता न हो।

(ख) वहां श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का प्रकाश हो। कम से कम छः तैयार-बर-तैयार सिंघ हाज़िर हों, जिनमें से एक ताबिया बैठे और बाकी पांच अमृत छकाने के लिए हों। इनमें सिंघनियां भी हो सकती हैं। इन सभी ने स-केश स्नान किया हो।

(ग) इन पांचों प्यारों में कोई अंगहीन (अंधा, काना, लंगड़ा, लूला अथवा दीर्घ रोग वाला) न हो। कोई तनखाहिया न हो। सब तैयार-बर-तैयार दर्शनी सिंघ हों।

(घ) हर देश, हर मजहब और जाति के हर स्त्री-पुरुष को अमृत छकने का अधिकार है, जो सिक्ख धर्म ग्रहण करने पर उसके उसूलों पर चलने का प्रण करे।

बहुत छोटी अवस्था का न हो, होश संभाली हो। अमृत छकने वाले हरेक प्राणी ने स-केश स्नान किया हो और प्रत्येक पांच ककार (केश, कृपाण गात्रे वाली, कछहरा, कंघा, कड़ा) का धारक हो। अन्य मत का कोई चिन्ह न हो, सिर नंगा अथवा टोपी न हो, छेदक आभूषण कोई न हों। अदब के साथ हाथ जोड़ कर श्री गुरु जी के हजूर खड़े हों।

(ङ) यदि किसी ने कुरहित करने के कारण दोबारा अमृत छकना हो तो उसको अलग करके संगत में पांच प्यारे तनखाह लगा लें।

(च) अमृत छकाने वाले पांच प्यारों में से कोई एक सज्जन अमृत छकने के अभिलाषियों को सिक्ख धर्म के उसूल समझाये--

सिक्ख धर्म में किरतम की पूजा त्याग कर एक करतार की प्रेमा-भक्ति और उपासना बताई है। इसकी पूर्णता के लिये गुरबाणी का अभ्यास, साध-संगत तथा पंथ की सेवा, उपकार, नाम का प्रेम और अमृत छक कर रहित-बहित रखना आदि मुख्य साधन हैं, क्या आप इस धर्म को खुशी से कबूल करते हो?

(छ) 'हां' का उत्तर आने पर प्यारों में से एक सज्जन अमृत की तैयारी का अरदासा करके 'हुकम' ले। पांच प्यारे अमृत तैयार करने के लिए बाटे के पास आ बैठें।

(ज) बाटा सरब-लोह का हो और चौकी, सुनहरे (कूँड़े) आदि किसी स्वच्छ चीज़ पर रखा हो।

(झ) बाटे में स्वच्छ जल और बतासे डाले जायें और पांच प्यारे बाटे के इर्द-गिर्द बीर आसन[1] होकर बैठ जायें।

(ञ) तथा इन बाणियों का पाठ करें:-

जपु, जापु, १० सवय्ये ('स्रावग सुध' वाले), बेनती चौपई ('हमरी करो हाथ दै रच्छा' से लेकर 'दुसट दोख ते लेहु बचाई' तक), अनंद साहिब।

---

१. बीर आसन : दाहिना घुटना जमीन पर रख कर, दायीं टांग का भार पैर पर रख कर बैठना तथा बायां घुटना ऊंचा करके रखना।

(ट) प्रत्येक बाणी पढ़ने वाला बायां हाथ बाटे के किनारे पर रखे और दायें हाथ से खण्डा जल में फेरता जाये। सुरति एकाग्र हो। शेष के दोनों हाथ बाटे के किनारे पर और ध्यान अमृत की तरफ टिके।

(ठ) पाठ होने के बाद प्यारों में से कोई एक अरदास करे।

(ड) जिस अभिलाषी ने अमृत की तैयारी के समय सारे संस्कार में भाग लिया है, वही अमृत छकने में शामिल हो सकता है। बीच में आने वाला नहीं हो सकता।

(ढ) अब श्री कलगीधर दशमेश पिता का ध्यान धर कर प्रत्येक अमृत छकने वाले को बीर- आसन करा कर उसके बायें हाथ पर दायां हाथ रखाकर पांच चुले अमृत के छकाये जायें और प्रत्येक चुले के साथ यह कहा जाये:-

बोल 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तह'। छकने वाला छक कर कहे:- 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तह।' फिर पांच छींटे अमृत के नेत्रों पर लगाए जायें। फिर पांच छींटे केशों में डाले जायें। प्रत्येक छींटे के साथ छकने वाला छकाने वाले के पीछे-पीछे 'वाहिगुरु जी का खालसा, वाहिगुरु जी की फ़तह' गजाई जाए। जो अमृत बाकी रहे, उसको सभी अमृत छकने वाले (सिक्ख एवं सिक्खनियां) मिल कर छकें।

(ण) उपरांत पांच प्यारे मिल कर एक ही आवाज़ के साथ अमृत छकने वालों को 'वाहिगुरु' का नाम बतला कर मूल-मंत्र सुनायें और उनसे इसका रटन करायें:-

ੴ सति नामु करता पुरखु निरभउ निरवैरु
अकाल मूरति अजूनी सैभं गुर प्रसादि ॥

(त) फिर पांच प्यारों में से कोई सज्जन रहित बताए--"आज से आप ने 'सतिगुर कै जनमे गवन मिटाइआ' है और खालसा पंथ में शामिल हुए हो। आपका धार्मिक पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी और धार्मिक माता, माता साहिब कौर जी हैं। जन्म आपका केसगढ़ साहिब का

और वासी अनंदपुर साहिब के हो। आप एक पिता के पुत्र होने के कारण आपस में तथा अन्य सारे अमृतधारियों के धार्मिक भ्राता हो। आप पिछली कुल, किरत, कर्म, धर्म का त्याग करके अर्थात् पिछली जात-पात, जन्म, देश, मजहब का ख्याल तक छोड़ कर निरोल खालसा बन गए हो। एक अकाल पुरख के बिना किसी देवी, देवते, अवतार, पैगंबर की उपासना नहीं करनी। दसों गुरु साहिबान को तथा उनकी बाणी के बिना किसी और को अपना मुक्ति-दाता नहीं मानना। आप गुरमुखी जानते हो (यदि नहीं जानते तो सीख लो) और हर रोज़ कम से कम इन नित्तनेम की बाणियों का पाठ करना या सुननाः जपु, जापु, १० सवय्ये ('स्रावग सुध' वाले), सो दरु रहरासि और सोहिला। श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी का पाठ करना या सुनना, पांचों ककारों--केश, कृपाण[१], कछहरा[२], कंघा, कड़ा[३] को हर समय अंग-संग रखना।

ये चार कुरहतें नहीं करनी :

(१) केशों की बेअदबी।

(२) कुट्ठा[४] खाना।

(३) पर-स्त्री अथवा पर-पुरुष का गमन (भोगना)।

(४) तम्बाकू का सेवन।

इनमें से कोई कुरहित हो जाये तो फिर से अमृत छकना पड़ेगा। अपनी इच्छा के विरुद्ध अनजाने ही कोई कुरहित हो जाये तो कोई दण्ड नहीं।

सिरगुंम[५], नड़ीमार (जो सिक्ख होकर यह काम करें) का संग नहीं करना। पंथ सेवा और गुरुद्वारों की टहल में तत्पर रहना, अपनी कमाई में से गुरु का दसवंध देना आदि सारे काम गुरमति अनुसार करने।

---

१. कृपाण की लंबाई की कोई सीमा नहीं हो सकती।
२. कछहरा किसी भी कपड़े का हो सकता है परन्तु घुटनों से नीचा न हो।
३. कड़ा सरब-लोह का हो।
४. 'कुट्ठा' से भाव वह मांस है जो मुसलमानी तरीके से तैयार किया हो।
५. केशधारी होकर जो केश कटा दे।

खालसा धर्म के नियमों के अनुसार जत्थेबंदी में एक सूत्र पिरोये रहना, रहित में कोई भूल हो जाये तो खालसे के दीवान में हाज़िर हो कर विनती करके तनखाह बख्शानी। आगे के लिये सावधान रहना।

(ध) तनखाहिये ये हैं :-

(१) मीणें[1], मसंद, धीरमल्लिये, रामराईये आदि पंथ विरोधियों के साथ अथवा नड़ी मार, कुड़ी मार, सिरगुंम के साथ व्यवहार[2] करने वाला तनखाहिया हो जाता है।

(२) बे अमृतिये अथवा पतित का जूठा खाने वाला।

(३) दाहड़ा रंगने वाला।

(४) पुत्र अथवा पुत्री का रिश्ता मोल लेकर अथवा देकर करने वाला।

(५) कोई नशा (भांग, अफीम, शराब, पोस्त, कुकीन आदि) सेवन करने वाला।

(६) गुरमति के विरुद्ध कोई संस्कार करने कराने वाला।

(७) रहित में कोई भूल करने वाला।

(द) यह शिक्षा देने के उपरान्त पांच प्यारों में से कोई सज्जन अरदासा करे।

(ध) फिर ताबे बैठा सिंघ 'हुकम' ले, जिन्होंने अमृत छका है, उनमें से यदि किसी का नाम पहले श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी से नहीं था रखा हुआ, उसका नाम अब बदलाकर रखा जाये।

(न) अंत में कड़ाह-प्रसाद बंटे। जहाज़ चढ़े सभी सिंघ तथा सिंघनियां एक ही बाटे में से कड़ाह-प्रशादि मिल कर छकें।

३. तनखाह लगाने की विधि

(क) जिस किसी सिक्ख से रहित की कोई भूल हो जाये तो वह निकट की गुरु-संगत के पास हाज़िर हो और संगत के सम्मुख खड़े होकर अपनी भूल माने।

---

१. इनमें जो अमृत छक कर पंथ में मिल जायें, उनके साथ व्यवहार उचित है।

२. व्यवहार से भाव रोटी-बेटी की सांझ है, जिसका स्पष्ट अर्थ रिश्ता-नाता करके बिरादरी का संबंध पैदा करना है। गुरू साहिब का भाव पंथ को एक करके रखने का था ताकि अलग-अलग गुरुआई के केन्द्र या मिलगोभा (मिलावट) सिक्खी के अड्डे न बनें।

(ख) गुरु-संगत में से श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की हजूरी में पांच प्यारे चुने जायें, जो पेश हुए सज्जन की भूल को विचार कर गुर-संगत के पास तनखाह (दण्ड) तजवीज़ करें।

(ग) संगत को बख़्शने के समय हठ नहीं करना चाहिये। न ही तनखाह लगवाने वाले को दण्ड भरने में जिद करनी चाहिये। तनखाह किसी किस्म की सेवा, विशेषत: जो हाथों से की जा सके, लगानी चाहिये।

(घ) अंत में सोध की अरदास हो।

४. गुरमता करने की विधि

(क) गुरमता केवल उन सवालों पर ही हो सकता है जो सिक्ख धर्म के प्रारंभिक उसूलों की पुष्टि के लिये हों अर्थात् गुरु साहिबान या गुरु ग्रंथ साहिब की पदवी, बीड़ की निरोलता, अमृत, रहित-बहित, पंथ की बनावट आदि को कायम रखने के बाबत। अन्य किसी किस्म के साधारण (धार्मिक, विद्यक, सामाजिक, पुलीटीकल) सवाल पर केवल मता हो सकता है।

(ख) यह गुरमता गुरु-पंथ का चुना हुआ केवल शिरोमणि जत्था अथवा गुरु-पंथ का प्रतिनिधि इकट्ठ ही कर सकता है।

५. स्थानक फैसलों की अपील

स्थानक गुरु-संगतों के फैसलों की अपील श्री अकाल तख़्त साहिब के पास हो सकती है।

गुरमति प्रचार हेतु
खुद पढ़ो, दूसरों को पढ़ाओ!

पूरन जोत जगै घट मै
तब खालस ताहि नखालस जानै।।

न डरों अरि सों जब जाइ लरों,
निसचै कर अपनी जीत करों।।

प्रथम रहत यह जान,
खंडे की पाहुल छके।

होइ सिक्ख सिर टोपी धरै।
सात जनम कुशटी होए मरै।

टोपी नहीं, दस्तार सजाओ!

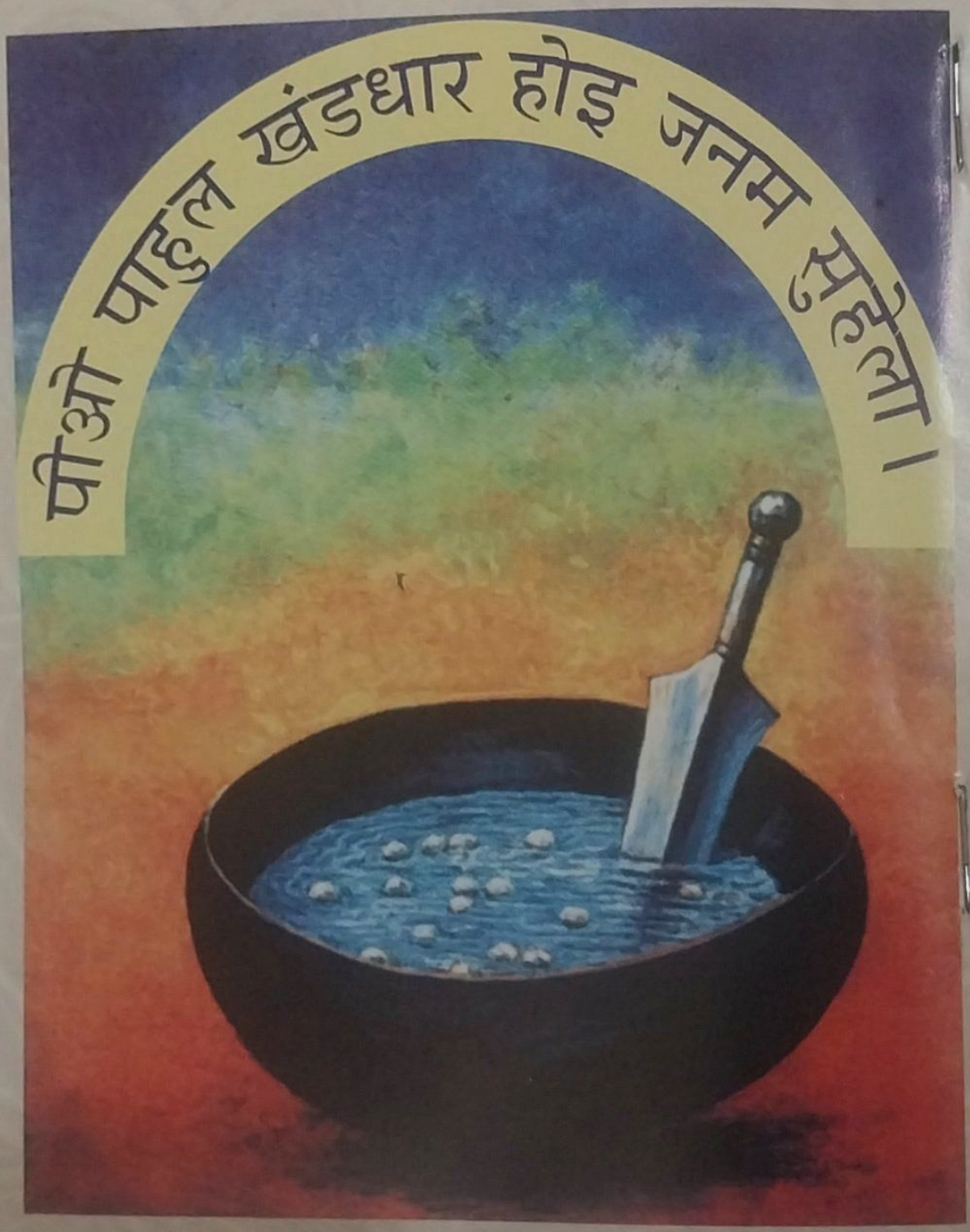
पीओ पाहुल खंडधार होइ जनम सुहेला।